2 अगस्त 2014 को सोन नगर–सोनभद्र में सामंतो द्वारा दलित आदिवासियों पर किये गये हमले के मामले में 3 अगस्त को की गई आगे की कार्रवाई की रिपोर्ट

जैसा कि आपको विदित कराया गया था कि दिनांक 2 अगस्त 2014 को उ0प्र0 के जनपद सोनभद्र के गॉव सोन नगर में वहां पुश्तैनी रूप से रह रहे व अपनी ज़मीनों पर खेती कर रहे दलित आदिवासियों पर गॉव के ही दबंग यादव व घसिया समुदाय के लोगों की भीड़ द्वारा सुनियोजित तरीके से हमला किया, जिसका दलित आदिवासियों ने संख्या में कम होने के बावजूद मुंहतोड़ जवाब दिया, एक घण्टा चले इस संघर्ष के बाद हमलावर दलित आदिवासी महिलाओं के नेतृत्व में की गई इस जवाबी कार्रवाई का सामना नहीं कर सके और वहां से भाग खड़े होने को मजबूर हुए। दुद्धी स्थित सरकारी अस्पताल के डाक्टरों ने ना सिर्फ इस हमले में घायल हुए 20 से अधिक महिला–पुरुषों का ईलाज करने से मना कर दिया बल्कि अमानवीय तरीके से उनको अस्पताल के कमरों से खदेड़ कर बाहर कर दिया। इस वक्त अस्पताल में इस हमले का मुख्य सूत्रधार ग्राम प्रधान जोरूखाड़ जगदीश प्रसाद यादव वहीं अस्पताल में मौजूद था।

इस घटना से पूरे सोनभद्र में अखिल भारतीय वन–जन श्रमजीवी यूनियन के स्थानीय सदस्य कार्यकर्ताओं सहित तमाम वनाश्रित समुदायों में रोष फैल गया व कल दिनांक 3 अगस्त को स्थानीय नेतृत्वकारी सुश्री सोकालो, फुलबासी व यूनियन की उपमहासचिव रोमा के नेतृत्व में समुदाय के सैकड़ों महिला पुरुषों ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय को घेर लिया व पुलिस प्रशासन, वनविभाग, अस्पताल प्रशासन व हमलावर दबंगों के खिलाफ जमकर नारे बाज़ी की। अंततः पुलिस अधीक्षक श्री रामबहादुर यादव को वार्ता के लिये मज़बूर होना पड़ा और प्रदर्शन कर रहे यूनियन के प्रतिनिधीमंडल के साथ वार्ता करनी पड़ी। इस वार्ता में प्रतिनिधी महिलाओं सोकालो, फुलबासी व उपमहासवि रोमा द्वारा पुलिस की निष्क्रियता, अस्पताल के डाक्टरों की असंवेदनशीलता के बारे में जमकर लताड़ लगाई। जिसपर तत्काल कार्रवाई करते हुए पुलिस अधीक्षक द्वारा एस.ओ राबर्टस्गंज की ड्यूटी लगाकर सभी घायलों का उपचार कराया गया व मेडिकल रिपोर्ट तैयार की गई। इसके अलावा यह तय हुआ की कल इस मामले की एफ.आई.आर भी दर्ज कर ली जायेगी। इस पूरे मामले में समुदायों के प्रति विरोधी रवैया अपनाने वाले थानाध्यक्ष विंढमगंज को भी पुलिस अधीक्षक के सामने फोन पर जमकर लताड़ लगाई गई व चेतावनी दी। पुलिस अधीक्षक को भी चेतावनी दी गई कि इस तरह की कार्रवाईंया पूरे जनपद को आपसी नफ़रत और जातीय हिंसा की आग में झोंक सकती हैं और मौका देखकर यहां नक्सलवादियों के लिये भी पॉव पसारने की ज़मीन तैयार हो सकती है। सहारनपुर का उदाहरण देते हुए सख्ती के साथ कहा गया कि आज पूरा उ0प्र0 पुलिस की निष्क्रियता और लापरवाही की वजह से जातीय व साम्प्रदायिक हिंसा की लपेट में आता जा रहा है, जिसकी वजह एस.ओ विण्ढम गंज भूपेन्द्र यादव जैसे पुलिसकर्मी ही हैं, मॉग की गई कि एस.ओ विण्ढम गंज को तत्काल प्रभाव से निलम्बित किया जाये। यह भी चेतावनी दी गई कि अगर पुलिस अब भी निष्क्रिय रही या लापरवाही बरती गयी तो यहां अखिल भारतीय वन–जन श्रमजीवी यूनियन द्वारा सामंत, वनविभाग, पुलिस व प्रशासन के खिलाफ एक बड़ा आन्दोलन छेड़ा जायेगा। पुलिस अधीक्षक द्वारा इन सारी बातों को संज्ञान में लिया गया व तत्काल कार्रवाई का आश्वासन दिया और स्वीकार किया कि इस पूरे मामले की जड़ वनविभाग ही है, जोकि ग्राम प्रधान जगदीश यादव के माध्यम से यह सारे काम करवा रहा है। देर शाम इसके बाद ही वहां से धरना समाप्त किया गया। वार्ता के इस पूरे दौर में नेतृत्वकारी महिलाओं का रवैया पूरी तरह से आक्रामक रहा और पुलिस अधीक्षक अपना बचाव करने की मुद्रा में ही रहे।

अभी कुछ देर पहले आज 4 अगस्त को जिलाधिकारी कार्यालय द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि इस पूरे मामले की जांच के लिये उपजिलाधिकारी को आदेश कर दिये गये हैं और पुलिस अधीक्षक द्वारा सूचित किया गया कि वे दो दिन के अन्दर स्वयं सोन नगर जाकर सारे मामले की पड़ताल करेंगे। यूनियन द्वारा तय किया

गया कि वे इस पूरे मामले को अपने जनवादी आन्दोलन के माध्यम से प्रशासन पर दबाव बनाकर उन्हीं के माध्यम से शान्तिपूर्ण तरीके से हल करायेंगे, क्यूंकि हिंसा का जवाब हिंसा से देना यूनियन के नियम कायदों में शामिल नहीं है। उल्लेखनीय है कि हमलावर दबंग समुदायों को वनविभाग, पुलिस व प्रशासन का पूरा संरक्षण व ताकत मिली होने के बावजूद सोन नगर के दलित आदिवासी वनाश्रित समुदायों के लोगों ने अपनी ज़मीन पर से अपना दख़ल नहीं छोड़ा है, वे पूर्व भांति इस ज़मीन पर काबिज बने हुए हैं।

जनसंघर्षों की विजय हो

2 अगस्त 2014 की सम्पूर्ण रिपोर्ट

सोनभद्र के सोन नगर गॉव में दलित आदिवासियों पर सामंती तबकों की भीड़ द्वारा धारदार हथियारों से हमला

दिनांक 2 अगस्त 2014 ज़मीनी विवादों और सामंती तबकों की दबंगई के मामले में उ0प्र0 में सबसे अग्रणी जनपद सोनभद्र की तहसील दुद्धी थाना विंढमगंज के ग्राम जोरुखाड़ के टोला सोननगर में आज फिर यहां के सामंती तबके के लोगों ने सुनियोजित रूप से दलित आदिवासियों पर धारदार हथियारों से हमला कर दिया। एक ही दिन में दो बार किये गये इस हमले में दलित आदिवासी तबके के 20 से अधिक महिला पुरुष घायल हो गये व एक दलित युवक संजय की हालत् चोट से सर बुरी तरह फट जाने से गम्भीर बनी हुई है। वहां संख्या में कम होने के बावजूद दलित आदिवासियों ने भी महिलाओं की अगुआई में इस हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया और करीब एक घंटे तक चले संघर्ष में अंततः हमलावरों को भाग खड़े होने को मजबूर किया। दुद्धी स्थित सरकारी अस्पताल के डाक्टरों ने अमानवीय रवैया अपनाते हुए इन सभी को इलाज करने के बजाय अस्पताल के कमरे से खदेड़ कर बाहर कर दिया है। पुलिस व प्रशासन इस मामले में सूचना दिये जाने के बावजूद ना सिर्फ निष्क्रिय बने हुए हैं, बल्कि पीड़ितों को ही परेशान कर रहे हैं।

पहला हमला आज सुबहा करीब 11 बजे तब हुआ जब गॉव के एक दलित राजेन्द्र के परिवार के लोग अपनी ज़मीन पर हल जोत रहे थे तब गॉव के ही सामंती तबके के रामकुमार यादव (पंचायत सदस्य), बंशीधर यादव, भगवान दास यादव, संजय घसिया, हलदार घसिया, फोजदार घसिया, लालती व लालमन की अगुआई में करीब 100 से अधिक लोगों ने खेती कर रहे इस दलित परिवार पर धारदार हथियारों से हमला बोल दिया। सभी हमलावर अपने हाथों में कुल्हाड़ी, गंडासा, बांकी व लाठी डन्डे लिये हुए थे। हमलावरों ने महिलाओं को विशेष रूप से निशाना बना कर वार किये। हमला करते हुए महिलाओं के संवेदनशील अंगों के साथ भी बुरी तरह से छेड़छाड़ की गयी, इस पर महिलायें आक्रोषित हो उठीं और इस हमले का उन्होंने भी मुंहताड़ जवाब दिया। करीब एक घन्टा तक यह संघर्ष चलता रहा अंततः हमलावर दबंग वहां से भाग खड़े हुए। थाना विंढमगंज में पुलिस को सूचित किया गया, लेकिन घटना स्थल पर कोई अधिकारी नहीं पहुंचा। पीड़ित पक्ष की महिला फुलबासी व राजेन्द्र के अनुसार इसकी सूचना जब पुलिस अधीक्षक को दी गई तो पुलिस की एक गाड़ी गॉव तक आई लेकिन हमलावर सामंती तबके के लोगों से ही बात करके वापिस लौट गई। घटना स्थल तक जाने की व पीड़ितों से बात करने की किसी ने ज़रूरत नहीं समझी। इस हमले में संजय, सुदामा, राजदेव अगरिया, प्रमिला, चम्पा, विद्यावती, अमरीश व मीना सहित 20 से अधिक महिला पुरुषों को चोटें आईं हैं। दूसरा हमला दोपहर 3 बजे के आस–पास उस समय किया गया जब गॉव के दो आदिवासी पुरुष विचार गोण्ड व छविलाल गोण्ड गॉव के पास बहने वाली नदी पर गये थे, यहां भी उन्हीं हमलावरों ने इन दोनों को अकेला पाकर घेर लिया व बुरी तरह से पिटायी की। उनके पास रहे दोनों के मोबाईल फोन, दो साईकिलें व एक हजार रुपये भी छीन लिये। सूचना देने पर थाना विंढमगंज से पुलिस आई, लेकिन हमलावरों को रोकने के बजाय इन दोनों पुरुषों को ही अपने साथ थाने में ले गई।

गॉव की महिलाएं राजकुमारी आदि इन्हें थाना से छुड़ाकर अस्पताल ले गईं, जहां इनका उपचार करने से भी चिकित्सकों ने इंकार कर दिया है और अस्पताल परिसर से बाहर कर दिया है।
विदित हो कि यहां यह विवाद पिछले एक वर्ष से अधिक समय से चल रहा है व पीड़ित पक्ष द्वारा दर्ज कराया गया यह मामला न्यायालय में भी विचाराधीन है। इस गॉव में करीब 400 हेक्टेअर ज़मीन जिस पर यहां के दलित व आदिवासी परिवार पीढ़ियों से खेती करते चले आ रहे हैं, उसी के लालच में उन्हें यहां के सामंत यादव व घसिया समुदाय के दबंग लोग तरह तरह से परेशान करके उन्हें ज़मीन छोड़कर यहां से भाग जाने के लिये दबाव बना रहे हैं। *चुंकि आदिवासी व अन्य परम्परागत वनश्रित समुदायों के एतिहासिक रूप से वनों व वनभूमियों पर छीने गये अधिकारों को मान्यता देने वाला कानून ''वनाधिकार कानून–2006'' के संसद में पारित होने के बाद इन ज़मीनों पर यहां के दलित आदिवासी समुदायों का कानूनी अधिकार भी बनता है और उन्होंने इस कानून के तहत वनभूमि व वनाधिकारों के लिये अपने दावे भी प्रस्तुत किये हुये हैं। लेकिन सभी जगह की तरह यहां भी वनविभाग व प्रशासन द्वारा तमाम तरह के अड़ंगे लगाकर इन दावों को लम्बित रखा हुआ है। यहां के वनाश्रित समुदाय शासन, प्रशासन, पुलिस व वनविभाग से इस कानून को वास्तविक रूप से लागू कराने की लड़ाई भी सांगठनिक तरीके से लड़ रहे हैं। दूसरी तरफ़ बाहर से यहां की ज़मीनों के लालच में आकर बसे दबंग उच्च जातियों के लोग जो कि कानून के दायरे में नहीं आते वे इस कानून के लागू होने की प्रक्रिया पर भी अपना नियंत्रण रखना चाहते हैं। जिससे यहां के जंगल और ज़मीन के हक़दार एक फिर से अपने हक़ों को पाने से महरूम रह जाएं और आजीविका के साधन ना होने की स्थिति में इनके गुलाम बन कर इनके खेतों पर ही बेगारी करते रहें।* इन्हीं सब कारणों से तंग आकर यहां के दलित आदिवासियों ने एक वर्ष पूर्व न्यायालय की शरण ली व पुलिस प्रशासन को भी कई बार लिखित पत्र आदि दिये, चुंकि पीड़ित पक्ष के ये सभी लोग अखिल भारतीय वन–जन श्रमजीवी यूनियन के भी सदस्य हैं और अपने स्थानीय संगठन कैमूर क्षेत्र महिला मजदूर किसान संघर्ष समिति के बैनर तले आन्दोलनरत होकर भी अपनी सुरक्षा की मॉग को उठाते रहे हैं। हाल ही में 30 जुलाई को भी इन दलित आदिवासी परिवारों को परेशान करने के लिये गॉव में पीने के पानी का एकमात्र कुआं मिट्टी से पाट दिया और धमकी दी कि *''गॉव व ज़मीन छोड़कर चले जाओ अब तो देश में हमारी सरकार है हम तुम्हें चैन से जीने नहीं देंगे''*। उल्लेखनीय है कि ये कुआं यहां के आदिवासी दलित परिवारों ने विशेषकर महिलाओं ने ख़ुद की मेहनत से ख़ोद कर निकाला था। धमकियों का सिलसिला और तेज़ कर दिया गया। इस संदर्भ में कल दिनांक 1 अगस्त को पीड़ित पक्ष के लोगों ने थाना विंढमगंज में एक दरख्वास्त भी दी जिसमें इन्होंने अपनी सुरक्षा की गुहार लगाई, इन्होंने थानाध्यक्ष थाना विंढमगंज भुपेन्द्र यादव से भी फोन पर बात की, उन्होंने आश्वासन दिया कि कल हम गॉव में आएंगे और कार्रवाई करेंगे।

यहां के लोगों का मानना है कि इस घटना का मुख्य सूत्रधार मौजूदा ग्राम प्रधान जगदीश प्रसाद यादव ही है, जिसके ऊपर पहले भी एस.सी.एस.टी एक्ट सहित कई तरह के मामले गॉव के ही आदिवासी दलितों की ओर से दर्ज हैं। जिनसे बचने के लिए व मुक़दमें वापस लेने के लिए वो लगातार दबाव बना रहा है और स्थानीय पुलिस जगदीश यादव के पक्ष में समझौता कराने पर ही तुली हुई है। जगदीश प्रधान जोकि लोकसभा चुनाव से पहले यादव होने के कारण राज्य सरकार को हथियार बनाकर यहां के दलित आदिवासियों को आतंकित करने का काम करता रहा। जगदीश प्रधान की ही साजिशों के चलते यहां दलितों और आदिवासियों को भी एक दूसरे के खिलाफ कच्चे लालच देकर भड़काने की कोशिश की जा रही, जोकि यहां पूरे जनपद को जातिय हिंसा के भड़कने का कारण बन सकती है। गौरतलब है कि सोनभद्र के सामंती तबके जोकि इस बार के लोकसभा चुनाव से पहले राज्य सरकार को ही अपनी ताकत मानकर हमेशा यादव सरकार आने पर ही मुखर होकर निचले तबकों का उत्पीड़न करने लगते थे, इस बार यह पूरा सामंती तबका चुंकि भाजपा में चला गया और लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद इस तरह की घटनायें इस क्षेत्र में लगातार बढ़ रही हैं। यह भी गौरतलब है कि कैमूर का यह पूरा क्षेत्र जिसमें महज उत्तर प्रदेश ही नहीं बिहार, झारखण्ड भी आते हैं, सरकारी एजेंसियों के अनुसार हथियार बन्द आन्दोलनों के केन्द्र रहे हैं। लेकिन सोनभद्र में जैसे–जैसे आदिवासी दलित समुदायों ने अपने जनवादी तौर तरीकों से

किए जा रहे आंदोलनो की ताकत से अपनी छिनी हुई ज़मीनों पर दख़ल कायम करना शुरू किया तो सरकारी आंकड़ों से भी नक्सलवाद या तथाकथित माओवाद यहां से साफ हुआ।

दरअसल आज़ादी से पूर्व व आज़ादी के बाद कैमूर क्षेत्र में आने वाले जनपद सोनभद्र में मूल रूप से रहने वाले आदिवासी–दलित समुदायों के लोगों की पुश्तैनी ज़मीनों की बहुत बड़े पैमाने पर हेरा–फेरी करके वनभूमि में शामिल कर लिया गया और वनविभाग, पुलिस व प्रशासन की मिलीभगत से यहां के सामंती तबके यादव, घसिया, ठाकुरों व ब्राहमणों जैसी उच्च समझी जाने वाली जातियों को इनमें से अधिकांश ज़मीनें धन लेकर खेती के लिये सौंप दी गयीं। पिछले डेढ़ दशक से अपनी पुश्तैनी ज़मीनों से वंचित कर दिये गये यहां के आदिवासी–दलित समुदायों की महिलाओं ने अपने जनवादी संगठन बनाकर उनमें से करीब 25 हजार से अधिक एकड़ ज़मीन पर कई हिस्सों में अपना पुनर्दखल कायम कर लिया और वे अपनी छिनी हुई ज़मीनों को पाकर फिर से अपनी आजीविका कमाने लगे। यही बात यहां के सामंती तबकों को लगातार खटकती रहती है और प्रदेश में जब–जब यादव सरकार आती तो इन सामंती तबकों के हौसले बढ़ जाते। लेकिन इस बार मामला कुछ और हुआ पूरे देश की तरह यहां का भी तमाम सामंती तबका भगवा लहर में डूबकर उनके समर्थन में चला गया और अपनी ताक़त मोदी सरकार में देखने लगा। इसलिये अब जिस गॉव क्षेत्र में भी यहां के सामंती तबके अधिक हैं, वहां इस तरह के हमलों को तेज़ी दे रहे हैं। इस तरह के मामलों में संवेदनशील माने जाने वाले पूरे सोनभद्र में इस तरह की कार्रवाईयों से वनों पर व खेती पर अपनी आजीविका के लिये निर्भरशील आदिवासी दलित तबकों में अन्दर ही अन्दर एक आक्रोष पनप रहा है, जो कि कभी भी विकराल रूप ले सकता है। यहां पुलिस व प्रशासन के बेरुखी भरे रवैये से जातिगत हिंसा भी फैल सकती है और हथियार बन्द आंदोलनों को फिर से आने का रास्ता भी मिल सकता है। समय रहते यहां के स्थानीय पुलिस–प्रशासन व राज्य सरकार नहीं चेते तो यहां जो भी आयेगा या जो भी होगा इसके ज़िम्मेदार निश्चित रूप से इन्हें ही माना जाएगा। इस घटना के विरोध में ग्राम सोन नगर की महिलाओं ने तय किया है कि कल दिनांक 3 अगस्त को वे सड़क पर उतर कर विरोध प्रदर्शन करेंगी सरकारी दफतरों का घेराओ करेंगी। चुंकि यहां के तमाम दलित आदिवासी वनाश्रित समुदायों के लोग अखिल भारतीय वन–जन श्रमजीवी यूनियन का हिस्सा हैं, इस लिये यूनियन ने भी ऐलान किया है कि पुलिस व प्रशासन अगर समय रहते न्यायपूर्ण कार्रवाई नहीं करते तो अपनी मॉगों को लेकर यहां बड़ा आन्दोलन छेड़ा जाएगा। यूनियन की मॉग है कि लापरवाही बरतने वाले एस.ओ विण्ढमगंज को सस्पेंड किया जाये, इस पूरे मामले में सूत्रधार की भूमिका निभाने वाले प्रधान जगदीश प्रसाद यादव को व तमाम हमलावरों को गिरफतार करके जेल भेजा जाये, अस्पताल में गरीब समुदायों के साथ असंवेदनशीलता से पेश आने वाले डाक्टरों व कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये, महिलाओं की सुरक्षा हेतु पुलिस व प्रशासन की ओर से समुचित प्रबन्ध किये जायें और रुके हुए वनाधिकार कानून के दावों का जल्द से जल्द निस्तारण किया जाये।

रिपोर्ट–अखिल भारतीय वन–जन श्रमजीवी यूनियन (AIUFWP)